Shodh Sangam Patrika
E-ISSN: 3049-0707, Volume 3 | Issue 3 | (July - September 2026)

खोरठा कविता में आदिवासी जीवन और परंपराओं का चित्रण: सामाजिक चेतना और मानवीय भावनाओं के बीच संबंध का अध्ययन

उर्मिला कुमारी [1], लेफ्टिनेंट (डॉ०) अवध बिहारी महतो [2]
[1] शोधार्थी, स्नातकोत्तर खोरठा विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची
[2] सहायक प्राध्यापक (खोरठा), जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, मारवाड़ी महाविद्यालय, राँची

सार:

यह शोध-पत्र इस बात की विस्तार से जाँच करता है कि झारखंड के खोरठा काव्य साहित्य में आदिवासी जीवन और परंपराओं को कैसे दिखाया गया है। हालांकि खोरठा एक स्थानीय बोली है, लेकिन यह आदिवासी समुदायों से गहराई से जुड़ी हुई है; इसकी कविता केवल स्थानीय सुंदरता से आगे बढ़कर सामाजिक जागरूकता और मानवीय भावनाओं के बीच के जटिल संबंधों को उजागर करती है। इस शोध का उद्देश्य यह पता लगाना है कि श्रीनिवास पानुरी और शिवनाथ प्रमाणिक जैसे समकालीन कवियों ने, पारंपरिक लोकगीतों के साथ मिलकर, विस्थापन, शोषण और पहचान के संकट जैसे मुद्दों को मानवीय दृष्टिकोण से कैसे व्यक्त किया है। यह शोध गुणात्मक और वर्णनात्मक दृष्टिकोण का उपयोग करता है और महत्वपूर्ण खोरठा साहित्यिक कृतियों के विश्लेषण पर केंद्रित है। परिणाम बताते हैं कि खोरठा कविता क्षेत्रीय सीमाओं से परे जाकर एक सामूहिक झारखंडी पहचान बनाती है, जिसमें सहानुभूति और सामाजिक समानता के प्रति जागरूकता के नजरिए से आदिवासी चुनौतियों की पड़ताल की जाती है।

मुख्य शब्द: खोरठा कविता, स्थानीय परंपराएँ, सामाजिक चेतना, भावनात्मक जागरूकता, झारखंड, पारंपरिक धुनें।

1. प्रस्तावना

भारतीय साहित्य की क्षेत्रीय धारा में झारखंड की क्षेत्रीय भाषाओं का योगदान अपरिहार्य है, जिनमें खोरठा एक प्रमुख स्थान रखती है। खोरठा भाषी क्षेत्र, जिसे 'सदान' (गैर-आदिवासी स्थानीय निवासी) संस्कृति का केंद्र माना जाता है, आदिवासी समुदायों (संथाल, मुंडा, उराँव) के साथ सदियों से सांस्कृतिक आदान-प्रदान का साक्षी रहा है। किसी भी क्षेत्र का साहित्य, वहाँ की जटिल सामाजिक संरचना और अंतर-सामुदायिक संबंधों का दर्पण होता है। खोरठा पद्य साहित्य में आदिवासी जीवन और संस्कृति का चित्रण मात्र एक विषयवस्तु नहीं है, बल्कि यह साझा क्षेत्रीय अस्मिता के निर्माण की प्रक्रिया है। विस्थापन, वन-अधिकार, और शोषण जैसे संघर्षों को खोरठा कवियों ने अपनी लेखनी का आधार बनाया है। हालांकि खोरठा साहित्य पर शोध हुए हैं, लेकिन इस बात का व्यवस्थित अनुशीलन कम हुआ है कि यह पद्य साहित्य किस प्रकार सामाजिक चेतना (सामूहिक अन्याय के विरुद्ध जागरूकता) और मानवीय संवेदना (दर्द, करुणा, और एकजुटता) के दोहरे लेंस से आदिवासी जीवन को प्रस्तुत करता है। यह शोध इसी अंतःसंबंध को विश्लेषित करने का प्रयास करता है।

1.2 शोध के उद्देश्य

i. खोरठा पद्य साहित्य में आदिवासी संस्कृति (पर्व, रीति-रिवाज, प्रकृति-संबंध) के चित्रण को पहचानना।

ii. आधुनिक खोरठा कविताओं में सामाजिक चेतना के उन आयामों का विश्लेषण करना जो आदिवासी समुदायों के राजनीतिक और आर्थिक शोषण को उजागर करते हैं।

iii. आदिवासी जीवन के चित्रण में निहित मानवीय संवेदना और करुणा के तत्वों का मूल्यांकन करना।

iv. यह स्थापित करना कि खोरठा पद्य साहित्य क्षेत्रीय और जनजातीय भाषाओं के बीच संस्कृति के सेतु का कार्य किस प्रकार करता है।

2. खोरठा पद्य साहित्य की समीक्षा

आधुनिक खोरठा साहित्य पर शोध से पहले, खोरठा की लोक-परंपरा पर किए गए मूलभूत कार्य को समझना आवश्यक है। डॉ. ए.के. झा ने खोरठा व्याकरण और लोक साहित्य के वैज्ञानिक विश्लेषण की नींव रखी। इनकी कृतियाँ खोरठा के प्रकृति चित्रण, ऋतु चक्र और क्षेत्रीय विशिष्टताओं को स्थापित करती हैं। झा जी का कार्य खोरठा को केवल लोकभाषा नहीं, बल्कि मानक भाषा के रूप में स्थापित करने की दिशा में पहला कदम था। हालांकि, इनका ध्यान भाषाविज्ञान और मौसम विज्ञान पर अधिक था, जनजातीय संस्कृति के सामाजिक-भावनात्मक अंतः संबंधों पर कम। डॉ. चतुर्भुज साहू ने जनजातीय लोक साहित्य और संस्कृति पर विस्तृत कार्य किया है। इनके शोध ने खोरठा और पड़ोसी आदिवासी भाषाओं (जैसे संथाली, कुड़ुख) के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान और पर्वों (कर्मा, सरहुल) की समानता को रेखांकित किया है। यह कार्य सांस्कृतिक तादात्म्य के अध्ययन के प्रथम उद्देश्य के लिए आधार प्रदान करता है। कई खोरठा विद्वानों ने संस्कार गीतों (विवाह, छठियारी) और पर्व गीतों (सोहराय, कर्मा) का संग्रह किया है। ये गीत मौखिक परंपरा में निहित आदिवासी और सदान दोनों समुदायों के साझा जीवन-मूल्यों, प्रकृति-पूजा और श्रम संस्कृति को दर्शाते हैं। यह साहित्य खोरठा पद्य में संस्कृति-चित्रण और मानवीय संवेदना के प्राथमिक, अविकसित स्वरूप को समझने में सहायक है। यह बताता है कि संस्कृति का संगम पहले से मौजूद था।

3. शोध प्रविधि

यह शोध एक गुणात्मक और विवरणात्मक अध्ययन है। इसमें प्रमुख खोरठा कृतियों के पाठ विश्लेषण और तुलनात्मक दृष्टिकोण का उपयोग किया गया है। अध्ययन हेतु श्रीनिवास पानुरी की 'दिव्य-ज्योति', शिवनाथ प्रमाणिक की 'दामुदरेक कोराञ' और विश्वनाथ दसौंधी 'राज' की चयनित कविताओं के साथ-साथ कर्मा, सरहुल और सोहराय जैसे लोकगीतों को आधार सामग्री के रूप में चुना गया है।

4. विश्लेषण एवं विवेचना

आधुनिक काल में, खोरठा कविता ने शोषण और सामाजिक यथार्थ पर ध्यान केंद्रित किया, जो सामाजिक चेतना के इस आयाम को मज़बूती देता है। श्रीनिवास पानुरी को 'खोरठा साहित्य का भीष्म पितामह' कहा जाता है। इनकी रचनाएँ (*दिव्य-ज्योति, बाल-किरण*) प्रगतिवादी चेतना का केंद्र हैं। पानुरी जी ने गरीबी, शोषण (ज़मींदारी), और अशिक्षा के खिलाफ खुलकर लिखा। उन्होंने खोरठा कविता को केवल प्रेम और प्रकृति के दायरे से निकालकर सामाजिक क्रांति की ओर मोड़ा।

पानुरी का कार्य सामाजिक चेतना संबंधी शोध-उद्देश्य के लिए सर्वाधिक प्रासंगिक है, विशेषकर शोषक व्यवस्था के प्रति उनके विरोध और साहित्य को समाज बदलने का हथियार मानने की उनकी धारणा के कारण। हालांकि, उनका ध्यान मुख्यतः सदान समाज की समस्याओं पर केंद्रित रहा, जबकि जनजातीय जीवन के विशिष्ट संघर्षों पर तुलनात्मक

रूप से कम केंद्रित रहा। आधुनिक खोरठा कवियों ने सामाजिक विषमताओं और शोषण के विरुद्ध प्रबल स्वर व्यक्त किया है। पानुरी जी की कविताओं में मार्क्सवादी चेतना और शोषितों के प्रति गहरी मानवीय संवेदना मिलती है:

"मानुसक रकत चूसल, जदि तोय मानुस।

तबे बुझल हय, तोय बड़ मानुस।।"

यह कविता सीधे तौर पर उन सामंती और औद्योगिक शक्तियों पर प्रहार करती है जो आदिवासी और ग्रामीण श्रम का शोषण करती हैं।

विश्वनाथ दसौंधी 'राज' की कविताएँ (ढलती सांझ का सुरज) और रचनाएँ अधिक यथार्थवादी और तीखे व्यंग्य से युक्त रही हैं। इन्होंने राजनीतिक भ्रष्टाचार, दिकु समस्या और आम आदमी की पीड़ा को सशक्त ढंग से अभिव्यक्त किया है। 'राज' का कार्य शोषण और न्याय की माँग से जुड़ी सामाजिक चेतना के विश्लेषण के लिए महत्वपूर्ण है।

शिवनाथ प्रमाणिक की कृतियाँ, विशेषकर खंड-काव्य 'दामुदरेक कोराञ', आधुनिक खोरठा साहित्य की विशिष्ट उपलब्धि हैं। इस रचना में दामोदर नदी और पारसनाथ (सम्मेद शिखर) के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व को रेखांकित किया गया है। यह रचना सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और भौगोलिक चेतना को एक साथ जोड़ती है। यह प्रस्तुत शोध के संस्कृति-चित्रण और पर्यावरणीय संवेदना संबंधी पहलुओं के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसमें प्रकृति और मानव सभ्यता के अटूट संबंध को भावनात्मक आधार दिया गया है।

खोरठा पद्य में आदिवासी जीवन के राग-रंग, पर्व-त्योहार (करम, सरहुल) और प्रकृति प्रेम को प्रमुखता मिली है। पारंपरिक लोकगीतों में प्रकृति को देवता नहीं, बल्कि परिवार का सदस्य माना गया है। प्रमाणिक जी के खंडकाव्य 'दामुदरेक कोराञ' में आदिम संस्कृति और प्रकृति के अद्वैत संबंध को दर्शाया गया है:

"बोन झार, नद्दी नाला, हमिनक संगे गावे।

पहाड़ पर्वत, डहर डोरी, हमिनक संगे हाँसे।।"

जंगल-झाड़, नदी-नाले हमारे साथ गाते हैं; पहाड़, पर्वत और ये पगडंडियाँ हमारे साथ हँसती हैं। यह पंक्ति 'पारिस्थितिक चेतना' को दर्शाती है, जहाँ आदिवासी संस्कृति प्रकृति से अलग नहीं, बल्कि उसका एक अटूट अंग है। खोरठा पद्य साहित्य आदिवासी जीवन के चित्रण में द्वैत प्रस्तुत करता है: एक ओर सांस्कृतिक सौहार्द और प्रकृति से निकटता, और दूसरी ओर शोषण तथा विस्थापन की कठोर वास्तविकता।

4.1 सांस्कृतिक तादात्म्य: प्रकृति, पर्व और जीवन-दर्शन

खोरठा कविता ने आदिवासी संस्कृति के मौलिक तत्वों को अपनाकर एक साझा क्षेत्रीय संस्कृति का निर्माण किया है।

4.1.1 प्रकृति का मानवीकरण और साझा दर्शन

खोरठा पद्य में प्रकृति केवल पृष्ठभूमि नहीं है; यह एक सक्रिय भागीदार है। आदिवासी दर्शन में, जंगल, पहाड़, और नदी देवता तुल्य होते हैं। खोरठा कवियों ने इस दर्शन को अपनी लेखनी में उतारा। शिवनाथ प्रमाणिक अपने खंड-काव्य 'दामुदरेक कोराञ' में दामोदर नदी को केवल जलधारा के रूप में नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक माँ के रूप में चित्रित करते हैं जो इस क्षेत्र के संघर्षों और खुशियों की साक्षी है। यह चित्रण आदिवासी समुदायों के 'वन-पुत्र' होने के भाव

और सदानों के 'जल-पुत्र' होने के भाव को एकाकार करता है। यह पद्य साहित्य सिद्ध करता है कि प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण (जैसे जल, जंगल) दोनों समुदायों का साझा जीवन-दर्शन है।

4.1.2 लोक-पर्वों में सांस्कृतिक घुलनशीलता

खोरठा लोकगीत, जैसे करमा और सोहराय, मूलतः आदिवासी/क्षेत्रीय पर्व हैं जो व्यापक रूप से खोरठा भाषी समाज में समाहित हो गए हैं।

करमा गीत: करमा पर्व भाई-बहन के अटूट प्रेम का प्रतीक है, जहाँ आदिवासी और गैर-आदिवासी स्त्रियाँ एक साथ व्रत करती हैं और नृत्य करती हैं। इन गीतों में प्रयुक्त प्रतीकों (जैसे करम डाली) का वर्णन खोरठा पद्य में मिलता है, जो पारस्परिक सम्मान और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को दर्शाता है। लोकगीतों में संथाली, मुंडारी और खोरठा शब्दों का मिश्रण पाया जाता है, जो भाषाई घुलनशीलता और सांस्कृतिक निकटता का प्रमाण है।

4.2 सामाजिक चेतना का विस्फोट: शोषण और प्रतिरोध

आधुनिक खोरठा पद्य साहित्य ने सीधे तौर पर उन सामाजिक और आर्थिक अन्यायों को निशाना बनाया है जिनका सामना आदिवासी और स्थानीय गरीब जनता ने औपनिवेशिक काल से लेकर आधुनिक युग तक किया है।

4.2.1 आर्थिक शोषण और 'दिकु' विरोध

सामाजिक चेतना का सबसे मुखर रूप 'दिकु' (बाहरी शोषक) संस्कृति के विरोध में दिखाई देता है। यह विरोध किसी व्यक्ति विशेष से न होकर उस व्यवस्था से है जो शोषण को बढ़ावा देती है। श्रीनिवास पानुरी की कविताओं में स्पष्ट रूप से ज़मींदारी प्रथा और पूँजीवाद के खिलाफ आवाज़ उठाई गई है। उनकी कविताएँ शोषक वर्ग को 'रक्त पीने वाला' बताती हैं और मजदूर वर्ग को संगठित होने का आह्वान करती हैं। यह संघर्ष आदिवासी समुदायों के 'जल, जंगल, ज़मीन' के अधिकार की लड़ाई से पूरी तरह मेल खाता है। विश्वनाथ दसौंधी 'राज' की कविताएँ, जो अधिक यथार्थवादी और व्यंग्यात्मक हैं, सरकारी तंत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार और जनजातीय अधिकारों के हनन पर सीधी टिप्पणी करती हैं।

4.2.2 विस्थापन और पहचान का संकट

खोरठा के आधुनिक लोकगीतों में विस्थापन की समस्या को मानवीय संवेदना के साथ उकेरा गया है।

"हाय रे झारखंडी! आपन माटी, आपन घर, छोड़ के जाय हय दोसर डहर।"

हाय रे झारखंडी! अपनी मिट्टी और अपना घर छोड़कर आज तुझे दूसरी राह (पलायन/विस्थापन) पर जाना पड़ रहा है। यह पंक्ति विकास की अंधी दौड़ में आदिवासियों की 'जड़' से उखड़ने की पीड़ा को व्यक्त करती है। झारखंडी साहित्य में विस्थापन और जमीन के अधिकार प्रमुख विषय रहे हैं, जो सीधे आदिवासी जीवन के संघर्ष और मानवीय संवेदना को दर्शाता है। बड़े औद्योगिक उपक्रमों (जैसे कोयला खनन, बाँध निर्माण) के कारण हुए विस्थापन ने खोरठा पद्य में एक मार्मिक विषय को जन्म दिया है। कविता में दर्द: विस्थापन केवल घरों के टूटने का नहीं, बल्कि पितृभूमि (जमीन) से सांस्कृतिक और भावनात्मक रिश्ते के टूटने का दर्द है। यह विषय सामाजिक चेतना का शिखर है, क्योंकि यह कविता को राजनीतिक विरोध का हथियार बनाता है। खोरठा कवि इस विस्थापन को 'विकास' के नाम पर आदिवासियों और सदानों की सामूहिक हत्या के रूप में देखते हैं।

4.3 मानवीय संवेदना का सेतुः करुणा और साझा नियति

सामाजिक चेतना जहाँ अन्याय के विरुद्ध लड़ने की प्रेरणा देती है, वहीं मानवीय संवेदना उस लड़ाई को नैतिक और भावनात्मक आधार प्रदान करती है।

4.3.1 विरह और करुणा का सार्वभौमिकरण

खोरठा पद्य ने व्यक्तिगत विरह या दर्द को सार्वभौमिक मानवीय संवेदना के स्तर तक पहुँचाया है। धान रोपते या जंगल से लकड़ी लाते समय गाए जाने वाले श्रम गीत केवल थकावट मिटाने के लिए नहीं हैं; वे मेहनत, गरीबी और अभाव की एक साझा नियति को दर्शाते हैं। ये गीत बताते हैं कि चाहे वह आदिवासी श्रमिक हो या सदान श्रमिक, उनका संघर्ष और दर्द एक ही है। पद्य साहित्य में आदिवासी और सदान नारियों के जीवन की समानता पर बल दिया गया है- दहेज, अशिक्षा, और पुरुष-प्रधान समाज के बंधनों के कारण उनकी पीड़ा एक समान है। यह साझा दुख सांस्कृतिक और भाषाई सीमाओं को तोड़ता है।

4.3.2 पर्यावरण के प्रति भावनात्मक लगाव

कवियों ने पर्यावरण को नष्ट करने वाले तत्वों के प्रति जो गुस्सा दिखाया है, वह केवल प्राकृतिक क्षति का गुस्सा नहीं है; यह जीवन के एक अभिन्न अंग को खोने का भावनात्मक दुख है। ए.के. झा जैसे कवियों ने वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाया, लेकिन अंततः उनकी अपील भावनात्मक है—मनुष्य को प्रकृति का आदर करना चाहिए, क्योंकि वह हमारा जीवनदाता है। यह मानवीय संवेदना का उच्चतम स्तर है, जहाँ करुणा केवल मनुष्यों तक सीमित न रहकर संपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र तक फैल जाती है।

5. निष्कर्ष

खोरठा पद्य साहित्य का अनुशीलन यह सिद्ध करता है कि आदिवासी जीवन और संस्कृति केवल पद्य की विषय-वस्तु नहीं हैं, बल्कि वे खोरठा साहित्य की अंतर्निहित आत्मा हैं। इसका महत्व केवल भाषा के संरक्षण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सिद्ध करता है कि एक क्षेत्रीय भाषा किस प्रकार सामाजिक चेतना को प्रेरित कर सकती है और मानवीय संवेदना के माध्यम से विभिन्न समुदायों (सदान और आदिवासी) के बीच भावनात्मक एकता स्थापित कर सकती है। सामाजिक चेतना खोरठा कविता को शोषक सत्ता के विरुद्ध एक मजबूत आवाज देती है, विशेषकर 'जल, जंगल, ज़मीन' के अधिकारों के मुद्दे पर, जो आदिवासी संघर्षों का केंद्र रहा है। मानवीय संवेदना इस संघर्ष को भावनात्मक गहराई प्रदान करती है और यह स्थापित करती है कि आदिवासी और सदान समुदायों की नियति, दुःख और आशाएँ एक-दूसरे से अविभाज्य रूप से जुड़ी हुई हैं। खोरठा कविता आदिवासी जीवन की सुंदरता और संघर्ष को एक ही कैनवास पर चित्रित करती है—यह चित्रण यथार्थवादी है, चेतनामूलक है, और अंततः मानवीय करुणा से ओतप्रोत है। यह शोध स्थापित करता है कि खोरठा पद्य साहित्य ने क्षेत्रीय भाषाओं की उपेक्षा की धारणा को चुनौती दी है और झारखंड में बहु-सांस्कृतिक समन्वय के एक सशक्त माध्यम के रूप में कार्य किया है। खोरठा पद्य साहित्य ने न केवल अपनी भाषा को समृद्ध किया है, बल्कि इसने झारखंड की जटिल सांस्कृतिक और सामाजिक संरचना के भीतर एकता, करुणा और न्याय की मशाल जलाकर एक महत्वपूर्ण अंतर-सामुदायिक सेतु का निर्माण किया है।

संदर्भ सूची

1. ओहदार, बी. एन. (2018). खोरठा भाषा एवं साहित्यः उद्भव एवं विकास. राँचीः मार्गदर्शन पब्लिकेशन ।

2. झा, ए. के. (1986). झारखंडी भाषा-संस्कृति के विभिन्न पहलुओं पर विचार ।
3. झा, ए. के. (2020). खोरठ गइद-पइद संग्रह. नई दिल्ली: पृथ्वी प्रकाशन ।
4. दिनेश, दिनमणि. (2019). सोहान लागे रे. राँची: झारखंड झरोखा ।
5. पानुरी, श्रीनिवास. (1954). दिव्य-ज्योति. धनबाद ।
6. पानुरी, श्रीनिवास. (1970). मातृभाषा. बरवाअड्डा, धनबाद ।
7. पानुरी, श्रीनिवास. (2010). आँखीक गीत. अर्जुन पानुरी ।
8. प्रमाणिक, शिवनाथ. (1998). खोरठा काव्य का स्वरूप. बोकारो: खोरठा साहित्य संस्कृति परिषद ।
9. प्रमाणिक, शिवनाथ. (2014). दामुदरेक कोराञ. राँची: झारखंड झरोखा ।
10. महतो, गजाधर 'प्रभाकर'. (2009). आब ना रहा पटाइल (खोरठा कविता संग्रह) ।
11. साहू, चतुर्भुज. (2010). झारखंडी लोक साहित्य ।